दिव्य-दर्पण

वर्ष-24 अंक-2 सितम्बर 2021

INDIAN SVD MISSION MAGAZINE

एस.वी.डी. संस्था पहचानी जाती है इन नामों से

लातिनी भाषा में - सोचिएतास वेरबी दीवीनी (Societas Verbi Divini)
अंग्रेजी भाषा में - सोसायटी ऑफ द डिवाइन वर्ड (Society of the Divine Word)
हिन्दी भाषा में - दिव्य शब्द संघ (Divine Word Society)
प्रचलित नाम - डिवाईन वर्ड मिशनरीज (Divine Word Missionaries)

भारत में पाँच धर्मक्षेत्र : मध्य भारत (INC), दक्षिण भारत (मुम्बई) (INM),
पूर्व भारत (INE), दक्षिण भारत (हैदराबाद) (INH), पूर्वोत्तर भारत (गुवाहटी) (ING)

संत आरनॉल्ड जानसन – तीन संघों के संस्थापक

दिव्य–शब्द संघ (SVD) पवित्रात्मा सेविका संघ (S.Sp.S) पवित्रात्मा आराधक संघ (S.Sp.SAP.)

दिव्य – दर्पण

"Your generous Contribution will help us to reach this magazine to you and many more.
(Yearly ₹ 50/-, 5 years ₹ 200/-)
- Chief Editor

आपकी सहयोग राशि आप तक यह पत्रिका पहुँचाने में हमारी मददगार साबित होगी।
(वार्षिक ₹ 50/–, पंचवार्षिक ₹ 200/–)
– प्रधान सम्पादक

- प्रधान सम्पादक -
फादर राजू डोडियार एस.वी.डी.

- सम्पादकीय सम्पर्क सूत्र -
इन्दौर
फादर फ्रांसिस मोहन एस.वी.डी.
खण्डवा
फा. पंक्रासियुस एस.वी.डी.
उदयपुर
फा. नॉर्बट हेरमन एस.वी.डी.
पंचमहल
फा. जस्टिन डि'सूजा एस.वी.डी.
झाबुआ
फा. रायाप्पन्न चिन्नापन्न एस.वी.डी.
भोपाल
फा. सवरी रायन एस.वी.डी.

- प्रकाशक -
फादर जोमोन जेम्स एस.वी.डी.

- वितरक -
सत् प्रकाशन संचार केन्द्र, इन्दौर

- पत्र व्यवहार का पता -
कैथोलिक आश्रम, पालदा
संत आर्नाल्ड स्कूल कैम्पस,
पोस्ट बॉक्स : 103, इन्दौर – 452 001
Email : divyadarpaninc@gmail.com
WhatsApp No.: 9907605127

मुखपृष्ठ एवं आवरण सज्जा : पवन भावसार
मुद्रक : सत् प्रचार प्रेस, इन्दौर

प्रस्तुत अंक में ...

शीर्षक	पृष्ठ
❊ सम्पादकीय ...	2
❊ फादर प्रोविंशियल का सन्देश	3
❊ माता मरियम के ख्यालों में	5
❊ ध्यान में ही जीवन की शांति है	8
❊ लावांग मरियम तीर्थ : जड़ी ...	10
❊ हादसा	13
❊ विश्वासियों का आदर्श माँ मरियम	16
❊ मम्मा मेरी से येसु की ओर	17
❊ टूटती डाली से उड़ते पक्षी	19
❊ श्रद्धांजली	20

सम्पादकीय...

मुझे याद है वो दिन। वो बचपन के दिन, जब माँ की उपस्थिति और उसका प्यारा स्पर्श मेरी हर तकलीफ़ का इलाज़ बन जाता था। जब भयंकर तूफ़ान या मूसलाधार बारिश की डरावनी रात होती, हम डर जाते और तब दहशत का ख़ौफनाक मंज़र हमें बुरी तरह से अपनी गिरफ़्त में ले लेता। ऐसे माहौल में वह माँ ही थी, जिसके आँचल के नीचे हम कुदरती सुकून तलाशते और हमें कभी निराश नहीं होना पड़ा। गाँव के बुजुर्गों से भूतों के किस्से सुनने के बाद जब हम अन्धेरी रातों की नींद में अचानक डरकर जाग पड़ते, तो वह माँ थी, जो यह कहा करती- डर मत, मैं हूँ न तेरे साथ। तब माँ के वो शब्द हमारा हौंसला हमें वापस लौटाने का काम करते और तब माँ की थपकियाँ हमें गहरी नींद में वापस ले जातीं। जब हम बीमार पड़ते, तो दवा के अलावा माँ की गोद का स्पर्श दुनिया के किसी भी बड़े अस्पताल के इलाज़ की तरह होता और हम बहुत जल्द चंगे हो जाते। और आज भी...

हाँ आज भी हमें एक माँ की ज़रूरत है। उसके रहमोकरम की ज़रूरत है, क्योंकि एक जानलेवा वाइरस ने हमारी दुनिया को हिलाकर रख दिया है। हम दहशत में हैं। लाचार हैं। दवा काम नहीं आ रही। आज फिर हमें माँ की ज़रूरत है। उसके स्पर्श की ज़रूरत है। आप जानते हैं, वह माँ कौन है? वह हम सब की माँ है, पूरी दुनिया की माँ, पूरी मानवजाति की माँ, यानी... माता मरियम। हमें उनकी कृपा की आज अत्यंत आवश्यकता है, क्योंकि आज हम दहशत की गिरफ्त में है। वाइरस की दहशत। महामारी की दहशत। बाढ़ की दहशत। प्राकृतिक आपदाओं की दहशत। कोरोना महामारी से दुनिया के डॉक्टर, वैज्ञानिक और सरकारें अपने-अपने तरीके से निपट रही हैं, मगर कोई किनारा नज़र नहीं आता, क्योंकि यह बीमारी नित नए रूप बदलकर सामने आ जाती है।

इस भीषण मुसीबत में हमें माँ को पुकारने की आवश्यकता है। हमने अपनों को खोया है। हमने अपनी नौकरी गवाँ दी है। रोज़गार में मंदी का दौर है। हम चाहें भी तो चर्च नहीं जा पाते। प्रार्थना नहीं कर पाते। हम ईश्वर से दूर होते जा रहे हैं। निराशा के इस माहौल में हमें माता मरियम की मदद चाहिए। कोई भी माँ अपने बच्चों को निराश नहीं करती। माता मरियम ने भी अपने बच्चों को कभी निराश नहीं किया है। हमें उनके पास आने की ज़रूरत है। उनसे प्रार्थना करने की ज़रूरत है।

तो आइये, आज हम माता मरियम की शरण में जायें और उनसे प्रार्थना करें कि वे अपने पुत्र प्रभु ईसा की आशीष फिर हम पर बरसाने की कृपा करें, ताकि हम सांसारिक दुःखों से छुटकारा पा सकें।

फादर राजू डोडियार SVD

फादर प्रोविंशियल का सन्देश

माता मरियम हमारे लिए ईश्वर की अद्भुत रचना की तरह है। एक ऐसी रचना, या एक ऐसी सृष्टि, जो हमारे लिए कौतुहल पैदा करने के साथ हैरान करने वाले अद्भुत व्यक्तित्व के समान है। हैरान इसलिए कि उनका जन्म तब हुआ, जब उनके माता-पिता वृद्धावस्था में क़दम रख चुके थे। बुढ़ापे में किसी दम्पति को बच्चे की प्राप्ति असम्भव बात है, लेकिन यह भी सत्य है कि ईश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं होता। वे कुछ भी कर सकते हैं। उनकी शक्ति का कोई ओर छोर नहीं है। और वही हुआ, जो ईश्वर की इच्छा थी। शायद ईश्वर ने बूढ़े माता-पिता की किसी प्रार्थना को क़ुबूल फ़रमाया होगा। अन्ना और जोआकिम की गोद में माता मरियम का आ जाना ईश्वर की अपार कृपा की बरसात के समान था। यह कृपा पूरी मानवजाति के लिए थी, जो माता मरियम के द्वारा प्रकट होने वाली थी।

फिर शुरू हुआ चमत्कारों व अद्भुत घटनाओं का सिलसिला, जब अचानक स्वर्गदूत गाब्रिएल माता मरियम के समक्ष प्रकट होते हैं और उन पर एक कुँवारी के रूप में माँ बनने का ईश्वरीय विधान प्रकट करते हैं। माता मरियम ईश्वरीय विधान के समक्ष नतमस्तक होती है। फिर संत यूसुफ़ हिचकिचाहट के बावजूद प्रभु की इच्छा स्वीकार करते हुए मरियम को अपनी पत्नी का दर्जा प्रदान करते हैं और दुनिया को मुक्ति का पैग़ाम देने वाले प्रभु येसु के पालक पिता बनना सहर्ष स्वीकार करते हैं। इस तरह अद्भुत घटनाओं का सिलसिला चलता रहता है और जब येसु का जन्म एक गौशाले में होता है, तो उन्हें आश्चर्य नहीं होता, क्योंकि तब तक उन्हें ईश्वर की अद्भुत घटनाओं की आदत पड़ चुकी

थी। फिर शुरू होता है, प्रभु ईसा मसीह के द्वारा किये जाने वाले चमत्कारों का सिलसिला, जिसमें अंधे देखते हैं, लंगड़े चलते हैं, मूर्दे जिन्दा होते हैं, रोगी स्वस्थ होते हैं और इस सभी घटनाओं का चश्मदीद गवाह बनती हैं, माता मरियम। वे प्रभु का साथ उनके आख़िरी क्षण तक देती हैं, जब प्रभु कलवारी पहाड़ पर क्रूस के ऊपर प्राण अर्पित करते हुए अपना अन्तिम कार्य सम्पन्न करते हैं, यानी प्राण त्यागते हैं।

माता मरियम ऐसी माँ है, जो दुःख हो या सुख, हर हाल में मानवजाति के लिए निर्धारित ईश्वरीय विधान का कार्य पूरा करने में अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित करती हैं और आज भी हमारे लिए उनका काम जारी है। आज का समय दुनिया के लिए अत्यन्त डरावना है। कोरोना ने सारा काम ठप्प कर दिया है। लोग मर रहे हैं। महामारी का ऐसा विकराल रूप बिगत कई दशकों में शायद ही कभी देखा गया हो। तो ऐसी हालत में हम क्या करें? कहाँ जाएं? क्या आज फिर हमें एक जीवनदायिनी माँ की मदद की ज़रूरत है ? माता मरियम से बड़ा कौन हो सकता है हमारा मददगार! वो सबकी माँ हैं ! उनकी मध्यस्थता इस मुश्किल वक़्त में हमारी रक्षा करने में पूरी तरह सक्षम है। बस हमें केवल उनकी शरण में जाने की ज़रूरत है। उनके पास हमारी हर मुश्किल का हल है। हर मर्ज़ की दवा है। हर समस्या का समाधान है। हर महामारी का इलाज़ है। बस हमें उनका दरवाजा खटखटाने की ज़रूरत है। हम यह भी जानते हैं कि 8 सितम्बर की तारीख़ दिव्य शब्द संघ के लिए हमेशा एक बड़े मुबारक दिन की तरह होता है, क्योंकि इसी दिन हमारी संस्था की स्थापना हुई थी। सन्त अरनॉल्ड जॉनसन, जो इस संस्था के संस्थापक हैं , माता मरियम के अनन्य भक्त थे। उन्होंने माता मरियम की इच्छा के बिना कोई भी निर्णय नहीं लिया। उन्होंने हमें शिक्षा दी है कि हमें दिव्य शब्द की तरह, यानी प्रभु ईसा के समान बनना है और अपने कार्यों द्वारा उनका साक्ष्य संसार के समक्ष प्रस्तुत करना है। आज इस संस्था को स्थापित हुए 146 वर्ष बीते हैं और भारत में इसका 89 वर्षों तक का सफ़र गुजरा है। इस दौरान हमारी संस्था ने अपने तरीके से लोगों की मदद की है और आगे भी हमारा कार्य जारी रहेगा, क्योंकि हमारा मार्गदर्शन होता है माता मरियम के इशारों पर। उनकी पवित्र आज्ञाओं पर।

आइए, आज हम माता मरियम से प्रार्थना करें कि वे हमेशा हमारे समाज के हर सदस्य का मागदर्शन करें और प्रभु ईसा की आशीष और कृपा प्राप्त करने में हमारी मध्यस्थता सदा सर्वदा करती रहें।

फादर जोमोन जेम्स SVD

माता मरियम के ख्यालों में

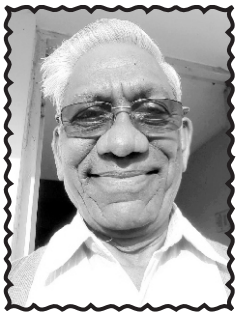

अंग्रेज़ी के महान साहित्यकार विलियम शेक्सपीयर के नाटक 'रोमियो एण्ड जूलिएट ' की नायिका परिस्थिति से दुःखी है कि अपने प्रियतम रोमियो और उनके परिवार के बैरी का उपनाम एक ही है, जिसकी वजह से वे दोनों आपस में प्यार को अभिव्यक्त करने में कतराते हैं। फिर भी वह कहती हैः ''गुलाब के फूल को तुम किसी भी नाम से पुकार लो वह तो मधुर सुगन्ध देगा... डोफ तुम तो सिर्फ मेरे हो... आखिर नाम में क्या रखा है ?'' वैसे ही माता मरियम को किसी भी नाम से पुकार लो, चाहे आप उसे फ्रांस में लूर्द की माता, पुर्तगाल में फातिमा की रानी, इटली में लॉरेटो, इंग्लैण्ड में वालसिंघ, आयरलैण्ड में मैराग, श्रीलंका में माडु और मेक्सिको में ग्वादालूपे के नाम से पुकार लो या फिर भारत में वैलांकनी की माता तथा माउंट मेरी की माता कह लो; वह तो अपना प्यार सबों पर लुटाती है जो उसके पास आता है।

मेरा अति परम सौभाग्य था कि मुझे सन् 1988 में अपने नेमी, (रोम में आयोजित आध्यात्मिक नवीनीकरण कोर्स) के बाद अपने सहपाठी फादर जोसेफ मंगलथ, फादर जोसेफ पी. ज़ेवियर, ब्रदर थोमस कुन्नाकाटुथड़ाथिल तथा ब्रदर स्वामी के साथ पवित्रभूमि की यात्रा का अवसर मिला। पवित्र बाइबिल में उल्लेखित प्रायः सभी विशिष्ठ स्थलों के दर्शन के बाद माता मरियम के घर नाज़रेथ जाने का सुखद अवसर आया। यूँ तो कल्पना की जा सकती है कि दो हज़ार साल पहले मध्यम वर्ग के मकान कैसे रहे होंगे ! फिर भी

गुफानुमा प्रवेश द्वार तथा सामने के हिस्से को बरकरार रखते हुए, उस स्थान को लोहे की सलाखों से सुरक्षित रखा गया है जहाँ गाब्रिएल दूत ने मरियम को संदेश दिया था। वैसे आम पर्यटकों के लिए प्रवेश निषेध था लेकिन हमारे साथ एक स्पेनिश फादर की माताजी थी जिसने भीतर जाने की अनुमति प्राप्त की।

किसी फिल्म की कहानी में फ्लेशबेक के समान, *अन्दर प्रवेश करते ही मैं दो हज़ार अट्ठयासी वर्ष पूर्व के उन क्षणों में पहुँच गया जहाँ किशोरावस्था में मरियम अकेली उस घर में थी। सोचने लगा उस दृश्य के बारे में जब अचानक स्वर्गदूत आया। कितनी भयभीत हुई होगी वह। डर के मारे मुँह से चीख निकल गई होगी ! सोचा*

होगा, 'ये सब क्या हो रहा है!' धीरज बँधाते हुए स्वर्गदूत ने कहाः ''मरियम डरिये नहीं !'' ...अपने आप को सम्भालते हुए मरियम ने कहाः ''देखिए, मैं प्रभु की दासी हूँ।'' मैं फिर वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में सोचने लगा कि कोई अकेली किशोरी के घर में कोई स्वर्गदूत जैसा आगन्तुक आता तो वह कहती ''प्लीज़ यहाँ से चले जाइए, मेरे मम्मी-पापा घर पर नहीं है, फिर आप ऐसी बातें कर रहे हैं... इत्यादि।'' लेकिन माता मरियम का विश्वास कितना गहरा था जहाँ उसने कहा : ''आपका कथन मुझमें पूरा हो जाए।'' (लूकस 1:38)

उस स्थान से बाहर निकलते ही गाईड हमें उस कुएँ की तरफ ले गया और कुएँ से पानी निकालने के लिए जंजीर से बँधी बाल्टी दिखाते हुए उसने कहा कि इसी बाल्टी से माता मरियम पानी भरा करती थी। सामने दो मंजिला चर्च है जहाँ नियमित रूप से मिस्साएँ होती रहती है। दस मिनट चलकर जाने की दूरी पर संत जोसेफ का घर है, जो उस समय कार्पेन्टी का केन्द्र रहा होगा।

नाज़रेथ से वापस आते समय काना के विवाह-भोज के स्थल को भला हम कैसे छोड़ सकते थे, जहाँ माता मरियम ने अपने बेटे येसु से पहला चमत्कार करवाया था। मैं अपनी तार्किक भावनाओं को दरकिनार कर गाईड की बातें सुनता रहा। वहाँ के चर्च की साक्रिस्ती में रखे हुए पत्थर के उन मटकों को दिखाते हुए उसने कहा कि ये वही मटके हैं जिसमें येसु ने पानी से अंगूरी बनायी थी। उसकी बातों पर ज्यादा ध्यान न दे पाया और खो गया उन्हीं ख्यालों में ... *कैसा रहा होगा वो बाराती माहौल जहाँ यहूदी रिवाज़ के अनुसार हफ्ता भर लोग अंगूरी पीते रहते थे। फिर येसु से मिलने वालों की भीड़ तथा उनके शिष्य जिन्होंने अंगूरी खत्म कर दी होगी। माता मरियम से रहा न गया, और कहा होगा... बेटा*

कुछ करो इनके पास अंगूरी खत्म हो गई है ...येसु ने कहाः ''भद्रे ! इससे मुझको और आपको क्या ?'' (योहन 2:4) परन्तु माँ तो बेटे की हर धड़कन जानती थी और उसने सेवकों से कहा, ''वे तुमसे जो कुछ कहे, वही करना।'' वही तो हमसे भी माता मरियम कह रही है, '' वे....., वही करना ।'' प्रभु येसु, हम सभी महामारी से बचे विश्वासियों से कह रहे हैं, ***''जिन हृदय रुपी पत्थर के मटकों को कोविड-19 ने बेरहमी से खाली कर दिया है, उन्हें अपने प्रेम से भर दो ताकि मैं उन्हें सुख-शान्ति नामक अंगूरी से लबालब कर दूँ!''***

येरूसलेम में हमारे प्रवास के दौरान धार्मिकता से ओतप्रोत होकर हमने सभी प्रमुख स्थलों का भ्रमण किया। माता मरियम के ख्यालों में डूबे, आइए चलते हैं गेथसेमेनी से कलवारी की चोटी तक। मेरे अन्य साथी पुरोहितों के साथ मैंने उसी स्थान पर पवित्र मिस्सा अर्पित की, जहाँ प्रभु येसु ने कहा थाः ''पिता ! यदि तू ऐसा चाहे, तो यह प्याला मुझसे हटा ले, फिर भी मेरी नहीं, बल्कि तेरी ही इच्छा पूरी हो।'' (लूकस 22:42) फिर आगे बढ़े जहाँ से लकड़ी का काठ उठाकर प्रभु क्रूस-मार्ग पर चले थे। रोती, कलपती और विलाप करती माता मरियम भी उसी अंतिम यात्रा में शामिल थी जहाँ उसने बेटे को देखकर आँखों ही आँखों अपना दुःख प्रकट किया था। और वह शायद वही प्रार्थना कर रही थी ''पिता ! यदि... '' और अंत में वही कहा होगा जो उसने गाब्रिएल दूत से कहा था ''ईश्वर की इच्छा पूरी हो।'' कोरोनाकाल में आज विश्व के सभी विश्वासीगण भी वही प्रार्थना दुहरा रहे हैं...।

क्रूस के नीचे अपने इने-गिने परीचितों के साथ माता मरियम खड़ी थी। प्रभु येसु ने उससे कहा, ''भद्रे ! यह आपका अपना पुत्र है... फिर से योहन से... ये तुम्हारी माता हैं।'' दूसरे शब्दों में 'मेरी मम्मी का ख्याल रखना।'

जी हाँ, तब से माता मरियम हमारी भी मम्मी हैं, जिसका हमें ख्याल रखना है।

येरूसलेम से तेलअवीव 60 किलोमीटर दूर है। वहाँ से भारत वापस आते समय काहिरा, मिश्रदेश जो सिर्फ एक घण्टे की यात्रा थी। यात्रा के दौरान मैं ख्यालों में डूबा रहा कि बालक येसु को बचाने के लिए मरियम और योसेफ जब बेथहेलम से मिश्रदेश भागकर आये थे, भला वे कैसे आये होंगे !!!

-फादर जॉन दीपक सुल्या एसवीडी

ध्यान में ही जीवन की शांति है

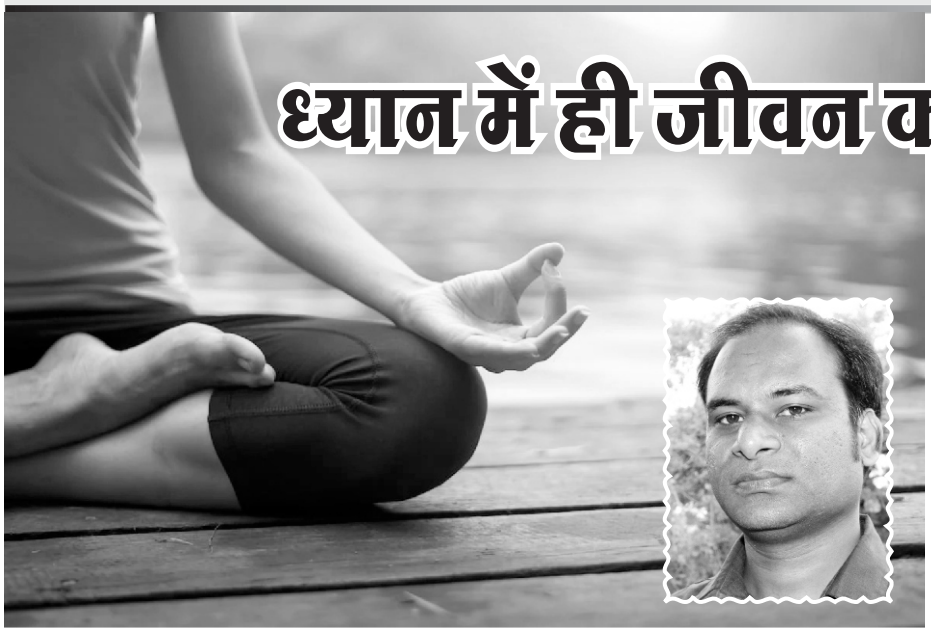

आज के आधुनिक दौर में ईश्वर से वार्तालाप या बातचीत करने को पूजा, अर्चना और वंदना कहा जा सकता है। परन्तु अर्न्तमन में परमात्मा में लीन होकर उसमें समाकर एक हो जाने का दूसरा नाम प्रार्थना, भजन-कीर्तन, मनन-चिंतन, ध्यान, अंतर्ध्यान, साधना, समाधि और मुक्ति है। ये विषय महासागर के समान ही गहरे व विस्तृत है, लेकिन साधु संतों के तजुर्बे एवं गुरुओं के मन हमारे आध्यात्मिक जीवन को आगे बढ़ाने में मदद करते हैं। विभिन्न धर्मों और गुरुओं के अनुभवों में आदर्श जीवन का रस भरा हुआ है।

इस अनुभव का एहसास नीले आकाश जैसा है जिसमें आराध्य की स्तुति करने वाले जितना ही उसके नीलेपन के पास जाना चाहते हैं वो उतना ही उनसे दूर होता जाता है। जिस प्रकार किसी पहाड़ी पर खड़े होकर दूर तक नज़रें फैलाकर देखने से कुछ दूरी के बाद सब कुछ धूंधला नज़र आता है उसी प्रकार ईश्वर को मानवीय दृष्टि से देखने पर उसका सही रूप नहीं प्रकट हो पाता है। समुद्र की गहराई नापने के लिए उसमें जिज्ञासु या ख़ोजी को गोता मारना पड़ता है ठीक उसी प्रकार हृदय की गहराईयों में छुपे रहस्यों को जानने के लिए उसके भीतर शांत भाव से झांककर देखना पड़ता है। यह तब ही संभव हो पाता है जब भागदौड़ वाली जिन्दगी जी रहा इन्सान परलौकिक आनंद की प्राप्ति हेतु स्वयं के भीतर एक ध्यानयात्रा शुरू करता है। तब उसके सामने अनगिनत रहस्य प्रकट होते हैं।

ईश्वर कौन है? मैं कौन हूँ? ईश्वर कब से है? उसे किसने बनाया? हमें किसने बनाया? अगर ईश्वर का अस्तित्व है तो वह कैसे है? किन्तु अगर नहीं है तो क्यों नहीं है? आख़िर उसने मनुष्य को क्यों बनाया? वो कहाँ रहता है? उसे कैसे ग्रहण किया जा सकता है? अगर मनुष्य ईश्वर के पास से आया है तो उससे दूर क्यों है? सांसारिक प्रलोभन ईश्वरत्वपूर्ण मनुष्य को अपने स्वामी से दूर क्यों कर देते हैं? हमारे जीवन में अशांति क्यों है? जिसका जन्म हुआ है उसे मरना क्यों पड़ता है? कोरोना वायरस और महामारी से ईश्वर हमें क्यों नहीं बचाते? क्या मरने के बाद इंसान ईश्वर के पास जाता है? आत्मा और परमात्मा का मिलन कब होता है? अगर ईश्वर हमारे साथ है तो हमें उसे ढूंढने की जरूरत क्यों पड़ती है? जिसने ईश्वर को ख़ोज लिया है क्या वो उससे संतुष्ट है? अगर हममें ईश्वर का निवास है तो हम उसे महसूस क्यों नहीं कर पाते? ऐसे कई अनगिनत रहस्य प्रश्न बनकर हमारे दिलोदिमाग पर हावी हो जाते हैं। जिनके उत्तर दे पाना बहुत कठिन होता है परंतु ध्यान, अंतर्ध्यान व समाधि के जरिये मनुष्य मुक्ति अवश्य पा लेता है।

इसी संदर्भ में मुझे एक मूर्ख मछली की कहानी याद आती है। एक बार ऐसा हुआ कि एक छोटी मछली सागर में तैरते-तैरते एक बड़ी मछली से यह प्रश्न करती है- ''दीदी, दीदी! सागर कहाँ है?'' बड़ी मछली हंसते

हुए कहती है, ''अरे! पगली, तू जिसमें खेलकूद रही है, घूम रही है, खा पी रही है, स्वास ले रही है, वही तो सागर है।'' लेकिन मुझे तो इसका एहसास ही नहीं हुआ, छोटी मछली ने बड़ी मछली से कहा। कोई बात नहीं, आज तुम्हें आखिरकार पता चल ही गया कि सागर वह है जिसमें हम दोनों रहते हैं। यही हमारा जीवन स्त्रोत है इसके बिना हमारा अस्तित्व ही नहीं है। ठीक उसी प्रकार इस मानवीय लोक में रहते हुए हममें से कई लोग उस छोटी मछली के समान यह भूल जाते हैं कि हम कहाँ रह रहे हैं ? अर्थात हमने परलोक को नर्कलोक बना दिया है। भूलोक जहाँ हम जन्में हैं वहीं हमारा परलोक है। यह सारी सृष्टि ईश्वर की बनाई हुई एक सुन्दर रचना है जिसका एक अंश हम मनुष्य भी है। परन्तु हमारे स्वार्थ और लालच ने इस लोक को बुरी तरह बर्बाद कर दिया है। जिस ईश्वर से हमें जीवन का वरदान प्राप्त हुआ उसी को हम महसूस नहीं कर पाते हैं और यह पूछ बैठते हैं, ''ईश्वर कहाँ है?'' ईश्वर हमारे हृदय, जीवन, पड़ोसियों और सारी सृष्टि में व्याप्त है। उसे अनुभव करने के लिए हमें बाहरी चक्षुओं की आवश्यकता नहीं है। उसके लिए सिर्फ और सिर्फ आध्यात्मिक नेत्रों की ज़रूरत है।

हमारे इन आध्यात्मिक नेत्रों को सही राह पर दृष्टि दौड़ाने के लिए प्रार्थना की मदद लेनी पड़ती है। ताकि वह अच्छाई के साथ-साथ बुराई देखने पर भी अच्छाई के मार्ग पर आगे बढ़े। इसलिए प्रार्थना एवं भक्ति का मानव जीवन में हमेशा से परम महत्व रहा है। पवित्र बाइबिल स्तोत्रग्रंथ में कहती है, ''प्रभु पर श्रद्धा रखो! पाप से दूर रहो! शय्या पर मौन होकर ध्यान करो (स्तोत्रग्रंथ 4:5)।''

ध्यान वह क्रिया है जिसमें सोचना नहीं पड़ता है मात्र साक्ष्य दिया जाता है। इसमें केवल शांत मन से स्वयं की अन्तर्आत्मा के साथ शालीनता से बैठकर यह देखा जाता है कि स्वयं के भीतर और बाहर क्या चल रहा है। बाहर गाड़ियों की तरह-तरह की आवाज़ें है और स्वयं के हृदय में भी बहुत सी आवाज़ें हैं जो हमें सताती है। विभिन्न प्रकार के विचारों में मन विचलित होकर दर-दर भटकने लगता है। ऐसे में ध्यानपूर्वक बैठकर सभी भावनाओं, आवाजों और विचारों के बीच मनुष्य अपना ध्यान केंद्रित कर लेता है तब वह ईश्वर का अनुभव करने लगता है। यह अनुभव उसे ईश्वर से जोड़ता है और पूर्णरूप से आध्यात्मिक तौर पर शांतचित्त स्वभाव में रूपांतरित करता है। अब इसे ही ध्यान (मेडिटेशन) एवं अंतर्ध्यान (कंटेम्प्लेशन) कहा जा रहा है। इसमें अनेक बीमारियों से निजात पाने का रहस्य छुपा है। इसके लिए शांत माहौल और मन की एकाग्रता की जरूरत है। कुछ पल मौन रहना और अपने आप से बातचीत करना जीवन में अत्यंत आवश्यक है। अपने आस-पास की परेशानियों को स्वीकार करना उतना ही जरूरी है, जितना कि हमारा प्रतिदिन का भोजन। तभी हम अपनी बुराईयों पर विजय पा सकते हैं। मनन-चिंतन केवल धर्मग्रंथों के महावाक्यों पर ही नहीं, बल्कि अपने जीवन और व्यवहार पर भी लागू होना चाहिए। सारी बुराईयाँ तो हमारे भीतर है और उसका अंत भी हमारे भीतर ही है। अतः ध्यान और अंतर्ध्यान के जरिये जीवन में शांति खोजें और आत्मिक मुक्ति पायें।

सुमित धनराज, महू
(लेखक प्रशिक्षक हैं।)

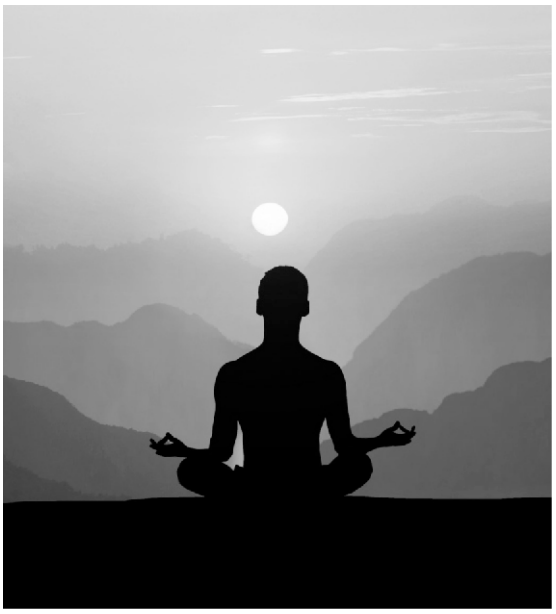

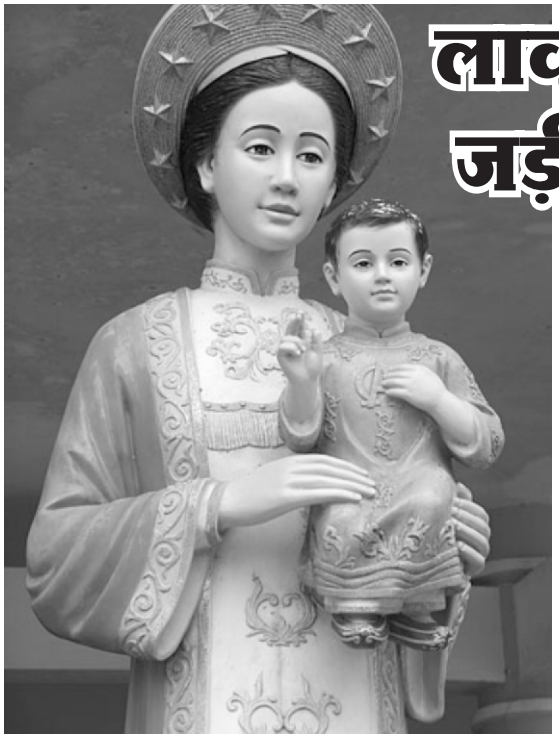

लावांग मरियम तीर्थ : जड़ी बुटी वाली माता

इतिहास गवाह है कि दक्षिण पूर्वी एशिया महाद्वीप के देश वियतनाम में काथलिक धर्म की जड़ें काटने और उसे उखाड़ फेंकने की साजिशें निरंतर चलती आयी हैं। बावजूद इसके वहाँ पर ईसायत फली-फूली। अपने विश्वास के कारण सहस्त्रों ने अपने प्राणों की आहुति दी है, कितने ही ख्रीस्त भक्तों का सामूहिक कत्लेआम किया गया। इस प्रकार कहना उचित होगा कि वियतनाम में ईसायत शहीदों के खून से सींची और फलित हुई है।

गौरतलब है कि वियतनाम में प्रभु येसु ख्रीस्त के सुसमाचार की घोषणा प्रेरित संत थोमस के समय से आरंभ हो गयी थी जब वे भारत सहित अन्य देशों में प्रभु वचन लेकर सन् 52 में आये थे।

फिर समय गुजरता गया और येसु समाजी पुरोहितों ने वहाँ पर सुसमाचार का प्रचार प्रसार किया। उनका

योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। यहां कहना उचित होगा कि 16 वीं सदी से लेकर 19 वीं सदी तक कई संघर्षों के बावजूद सुसमाचार घोषणा का कार्य पुरजोर तरीके से चला। 16 वीं सदी के आरंभ में पुर्तगाली मिशनरियों द्वारा सुसमाचार प्रचार के कई प्रयास किये गये परन्तु सफलता नहीं मिली। तत्पश्चात येसु समाजी मिशनरी आये और धीरे-धीरे उनके द्वारा किये गये प्रयासों का अच्छा खासा परिणाम देखने को मिला। फ्रेच पुरोहित अलेक्सजेन्डर डि रोड्स एवं अन्टोइने मारकेज़ ने सन् 1627 और 1630 के बीच करीब 6000 वियतनामियों का ख्रीस्त धर्म में स्वागत किया। फादर अलेक्सजेन्डर रोड्स ने वियतनामी भाषा को लेटिन भाषा की वर्णमाला में उतारा जिससे पश्चिमी देशों के लोगों के लिये वहां की स्थानीय भाषा को लिखना-पढ़ना सरल हो गया। इस प्रकार मिशनरियों द्वारा किया जाने वाला कार्य आसान हो गया और उसका सकारात्मक परिणाम देखने को मिला।

वियतनाम में 17 वीं और 18 वीं सदी में राजनैतिक सत्ता पाने के लिये बहुत अधिक उठापटक और संघर्ष की स्थिति रही। एक राज्य द्वारा अन्य राज्य पर अधिकार जताने की निरंतर कोशिशें होती रही। अतः कई सत्ता समीकरण टूटे और नये समीकरण बनते गये। ऐसे अशांत और डावांडोल राजनैतिक माहौल में स्थानीय

राजाओं ने अपनी जीत पक्की करने के लिये ईसाई मिशनरियों का हाथ थाम लिया क्योंकि उनके पास अच्छे संसाधन थे। परन्तु अपना काम हो जाने पर राजाओं द्वारा किये गये वादों से वो मुकर गये। उन एहसान फरामोशों ने सारी हदें तब पार कर दी जब उन्होंने मिशनरियों को देश से बाहर निकालने की साजिशें करते रहे। इसके लिये अब उन पर अत्याचार करने लगे। ख्रीस्तीयों पर सतावट का दौर 18 वीं सदी तक चलता रहा। इस सदी में ख्रीस्तीयों पर अत्याचार और सतावट अपने चरम पर थी। कई पुरोहितों को मौत के घाट उतार दिया गया। स्थानीय विश्वासियों और मिशनरियों के साथ भी वैसा व्यवहार किया गया। इस प्रकार प्रभु येसु के भक्तों का नरसंहार जारी रहा। सहस्त्रों को अपने विश्वास के कारण अपनी जान देनी पड़ी।

इन हालातों में बहुत सारे लोग घने जंगलों में भाग गये और वहीं उन्हें शरण लेनी पड़ी। कहा जाता है कि 17 वीं सदी और 18 वीं सदी के बीच करीब 1 लाख ख्रीस्तीयों को मौत के घाट उतार दिया गया। भारी सतावट के कारण बहुत सारे विश्वासियों को दक्षिण वियतनाम प्रोविन्स के उत्तरी भाग लावांग के घने जंगलों में शरण लेनी पड़ी, वहां जो स्वतंत्र थे अपने अपने विश्वास के आधार पर जीवन जीने के लिये। गौरतलब है कि अब वो जंगलों में रह रहे थे जहां उनकी जीविका के साधन बहुत ही सीमित थे। खाने-पीने की समस्या, जंगली जानवरों से सुरक्षा की चुनौति थी। इन मूलभूत चीजों के अभाव के बावजूद वो अपने विश्वास में अडिग थे। ईश्वर के सहारे के लिये प्रार्थनाएं किया करते थे। माता मरियम से अनुनय विनय करने के लिये रोज़री माला का जाप करते थे। सन् 1798 की बात है जब लोग सामूहिक रोज़री माला का जाप कर रहे थे, तब माता मरियम ने उन्हें दर्शन दिये। मां मरियम स्थानीय परिधान में खूबसुरत दिख रही थी। उनके हाथ में शिशु था और उनके दायें एवं बायें स्वर्गदूत थे। उनके सिर पर सोने का मुकुट चमक रहा था। अति सुन्दर माता ने उनके साथ बड़े प्यार से बातें की। वो उनके साथ जिस प्रकार एक माँ अपने बच्चों के साथ बड़े लाड़-प्यार से बातें करती है उसी प्रकार ही उनका व्यवहार था। गौरतलब है कि माता मरियम ने कई और स्थानों और देशों में दर्शन दिये जैसे फातिमा में जहां माता मरियम ने लोगों को चेतावनी दी परन्तु यहाँ वैसा कुछ भी नहीं था। माँ ने अपना स्नेह उन पीड़ितों पर जताया, उनकी समस्याओं को सुना और

निराकरण प्रदान किया। जंगलों में भिन्न-भिन्न बीमारियों के प्रकोप से बचने के और स्वस्थ रहने के घरेलु नुस्खे भी बताये । जंगल के पेड़-पौधों और जड़ी-बुटियों से औषधियाँ बनाने की कला सीखायी।

माता मरियम के दर्शन, स्नेह और विभिन्न बिमारियों से निजात पाने के घरेलु नुस्खों से मरियम भक्तों का जीवन बदल गया। वे शारीरिक तौर से भले-चंगे हो गये और साथ में आध्यात्मिकता में और परिपक्व होते गये। अब उन्हें प्यार करने वाली माता जो मिल गई थी जो सदा उनका ध्यान रख रही थी। समय गुजरने के साथ-साथ माता मरियम की भक्ति भी बढ़ती गयी। अब जब जंगल ही उनका घर-देश बन गया था तो लोगों ने माता के आदर में एक ग्रोटो का निर्माण किया। माता की चर्चा अब जंगल में आग सी फैल, नगर और शहरों तक जा चुकी थी सहस्त्रों लोग माता की शरण में आने लगे। इस प्रकार लावांग, सताये ख्रीस्तीयों का तीर्थ-स्थल बन गया। कई मन्नतें पूरी होने लगी, बहुत चमत्कार होने लगे और लोगों की आस्था मरियम में बढ़ने लगी। वहां सन् 1885 में एक विशाल चर्च का निर्माण आरंभ हुआ जो सन् 1900 में पूर्ण हुआ। लावांग की माता मरियम के नाम से प्रसिद्ध यह तीर्थ स्थल अब लाखों लोगों की आस्था का प्रतीक बन गया। सन् 1908 में लावांग की माता मरियम के आदर में प्रथम बार वार्षिक महोत्सव मनाया गया जो तब से लेकर आज तक जारी है। जहां हर वर्ष लाखों की संख्या में लोग मरियम भक्ति से ओतप्रोत होकर दर्शनार्थ आते हैं। लावांग के माता के दर्शन की यह अद्‌भुत और अति-सुन्दर एवं निराली गाथा है जो आज भी वियतनाम में गायी जाती है तथा पीढ़ी दर पीढ़ी गायी जाती रहेगी।

फादर जॉन वाखला SVD
सेंट ऑरनोल्ड पेरिश, विजय नगर, इन्दौर

सम्पादक के नाम सन्देश

शुरू से अन्त तक मैंने आपकी पत्रिका 'दिव्य दर्पण' का अवलोकन व अध्ययन किया और मुझे आपका प्रयास बेहद अच्छा लगा। सम्पादक महोदय ने सम्पादकीय के अलावा 'येसु जिन्दा है 'शीर्षक से एक लेख भी लिखा है, जो भाषा एवं विषयवस्तु के लिहाज़ से अत्यन्त सराहनीय है। पत्रिका में ईस्टर पर आधारित कई सुन्दर लेख पढ़ने को मिले, लेकिन सिस्टर अन्टोनेट का संस्मरण बेहद हृदयस्पर्शी मालूम हुआ। उनकी भाषा रोचक एवम् धाराप्रवाह लगी। सुमित धनराज जी का लेख भी अत्यन्त ज्ञानवर्धक है। एडवर्ड रफाएल सर एवम् राही जी की कविताएं सचमुच बेमिसाल हैं। तुकबंदी के माहिर इन दिग्गजों की प्रशंसा करना यक़ीनन सूरज को दीपक दिखाने के समान होगा। काश! प्रबोध कुमार राही जी आज हमारे बीच जिन्दा होते, तो कितना अच्छा होता! कोरोना के बेरहम हाथों ने इसी साल उन्हें हमसे जुदा कर दिया। ईश्वर से प्रार्थना है कि उन्हें स्वर्ग का अनन्त जीवन हासिल हो।

कहीं-कहीं हिज्जे और व्याकरण की अशुद्धियाँ रह गई हैं, जिन्हें एडिटिंग की मदद से दूर किया जा सकता था। वैसे अशुद्धियों की संख्या बहुत कम है।

एक अच्छी पत्रिका के प्रकाशन हेतु हमारी तरफ से बधाई स्वीकार करें। धन्यवाद।

विक्टर ब्लेक, हुबली, कर्नाटक।

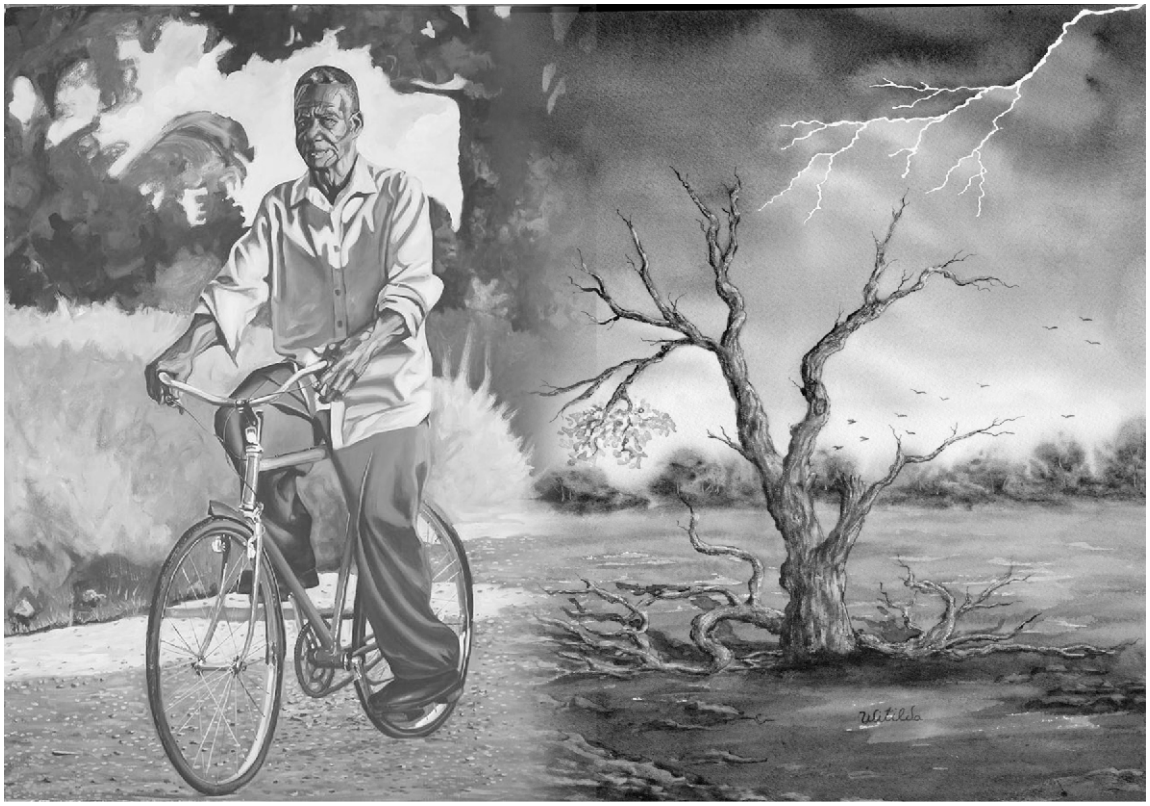

हादसा

साइकिल मेरे हाथ से छूट गई और मैं सड़क पर गिर पड़ा था। साइकिल से लटक रहे थैले की सब्जियाँ रोड पर बिखर गयी थी। आलू, प्याज, टमाटर, पालक, गोभी और एक नारियल। मैं घोर दहशत की ज़द में था, क्योंकि वातावरण में वो आवाज़ इतनी भीषण थी कि कान के परदे उखड़े हुए मालूम पड़ते थे। उसकी झनझनाहट रूकने का नाम नहीं लेती थी। लगता था, जैसे किसी भयानक बम का विस्फोट हुआ था। वह भी केवल पन्द्रह बीस कदम की दूरी पर, जहाँ पर वह पेड़ खड़ा था। जून के महीने में जब सूरज आसमान से आग की वर्षा करता, तो वह पुराना पेड़ गाँव वालों के अलावा गुजरते मुसाफिरों को अपनी छाया की शीतलता बाँटता था, लेकिन आज कुछ बादलों ने उसके ऊपर आग की बारिश कर दी थी। पता नहीं क्यों इस दुनिया में भले लोगों पर ही आफ़त क्यों बरपा होती है। बादल पानी जैसा अमृत बरसाने के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। उनकी इस अमृत के दम पर ही यह दुनिया कायम है, वरना इसका तो कब का दिवाला निकल जाता। मगर

दुनिया को अपने ऊपर घमण्ड बहुत है। ख़ुद को धनवान, शक्तिशाली और खूबसूरत समझने का घमण्ड । यह घमण्ड तो बादलों को होना चाहिए। उनका कार्य बड़ा है, क्योंकि वे अमृत बाँटते हैं । और वह भी मुफ़्त में बाँटते हैं। घमण्ड उस पेड़ को होना चाहिए, जो मुफ़्त में धूप में खड़ा मुसाफिरों को अपनी छाया की शीतलता बाँटता है । घमण्ड इस पृथ्वी को होना चाहिए । वह निकम्मों और बेइमानों का बोझ भी ढोती है, जो उसे नुकसान पहुँचाने का कोई कसर बाकी नहीं छोड़ते, मगर उसे तो कोई घमण्ड नहीं है। जिन्हें घमण्ड करने की कोई वजह नहीं होती, वे सबसे बड़े घमण्डी होते हैं। अपना-अपना नजरिया है । लेकिन आज अपने स्वभाव के विपरीत बादलों ने आग की वर्षा की थी । पता नहीं उनकी नाराज़गी और गुस्से की वज़ह क्या थी उनका क्रोध इतना भयानक क्यों था। यह बात समझ के बाहर थी । कभी-कभी ईश्वर के दूतों के कार्य मनुष्यों की समझ के बाहर होते हैं। शायद हमारी सोच का दायरा सीमित है और जब दायरा सीमित हो, तो छोटी बातें भी कठिन मालूम पड़ती है। बड़ी बातें तो रहस्य पैदा करती है।

काफी देर से आकाश में काले बादलों की विशाल सेना गर्जन कर रही थी और इन्हीं बादलों द्वारा उस पेड़ पर विद्युत-प्रहार हुआ था। अब उस पेड़ की क्या गलती थी, मालूम नहीं और उन लोगों की भी, जो उसके नीचे खड़े थे। प्रश्न बड़ा था और जवाब पूरी तरह से नदारद।

मैंने खुद को संभाला और मुड़कर उस तरफ देखा। उस विशाल पेड़ से धुआँ उठ रहा था और उसकी कई डालियाँ टूटकर लटक रही थी और आग के लपेटे में थी।

पाँच मिनट पहले की बात है, जब हल्की बूंदा-बांदी शुरू हुई थी। मैं उस पेड़ की शरण में आ खड़ा हुआ था। मुझे अगले गाँव में अपने घर जाना था। यहाँ बाजार से सब्जी खरीदने आया था। घनघोर बादलों को देखकर उस पेड़ की शरण में आना पड़ा था। तभी चार-पाँच और लोग भी आ गए थे । शायद वे भी मुसाफ़िर थे । इस दुनिया का हर इंसान एक मुसाफ़िर के सिवा कुछ नहीं है और यह दुनिया एक मुसाफिरखाने से बढ़कर क्या है, कुछ नहीं। जन्म लो, खेलो कूदो, जिस काम के लिये आये हो, उसे सम्पन्न करो, किसी की छत्रछाया में आराम करो और फिर हमेशा के लिए चल पड़ो। इस ज़िन्दगी की कथा तो बस इतनी-सी है।

उस दिन वहाँ पेड़ के नीचे खड़े सभी लोगों को बारिश के पानी से बचना था। हमने एक दूसरे को देखा। मुस्कुराये। इंसान होने का एक छोटा-सा सबूत पेश किया और बादलों के शान्त होने के समय का इंतज़ार करने लगे। उस वक़्त बादलों की गर्जना चरम पर थी। मैं आसमान की ओर देखने लगा। देर तक देखता रहा। उसी समय मेरे मन में अचानक एक विचार पैदा हुआ । वह विचार विद्युत-विसर्जन का था। यानी बिजली के गिरने का। लगा, जैसे कोई मुझे सचेत कर रहा था। जैसे कोई मुझे वहाँ से चले जाने के इशारे कर रहा था। बहुत बार ऐसा होता है कि कोई अदृश्य शक्ति आदमी को सही राह दिखाना चाहती है, तब उसके निर्देश अद्भूत होते हैं और अक्सर वे नासमझ आदमी की समझ से बाहर होते हैं। पता नहीं क्या सोचकर मैंने साइकिल सम्भाली और उस बूंदा-बांदी के माहौल के बावजूद मैं पेड़ की शरण से बाहर निकल गया। जाते-जाते मैंने दूसरों को भी खतरे की चेतावनी दी थी, लेकिन वे अपनी जगह पर कायम थे। बिंदास। लापरवाह। बेख़बर। शायद उन पर पानी में भीग जाने का डर हावी था। या उन्हें किसी चेतावनी को हवा में उछालने की पुरानी आदत थी । अक्सर लोग दूसरों के उपदेश पसन्द नहीं करते । किसी का कोई

मशवरा मन पर किसी दुश्मन के प्रहार का भ्रम पैदा करता है।इसलिए मशवरों को हवा में उछालने का रिवाज़ चल पड़ा है। वे खड़े रह गए और मैं चल पड़ा। मैंने अभी केवल पन्द्रह बीस कदमों की दूरी ही तय की थी कि बिजली गिर पड़ी और हादसा हो गया। वे पाँचों व्यक्ति जमीन पर पड़े थे। अब भी वे दुनिया से बेखबर थे। मगर अब की बेख़बरी दूसरे ढंग की थी। शायद मौत की बेख़बरी थी वह। वे निस्तेज थे। प्राणहीन थे। मानो दुनिया को अलविदा कह दिया हो।

बादलों की उस भीषण तबाही के बीच भी गाँव में स्थित घरों के दरवाजे खुल गए थे और लोग दौड़ पड़े थे। मैंने खुद को सम्भाला। सब्जियों को इकट्ठा किया। उन्हें थैले के हवाले किया। साइकिल उठायी। उसे सड़क के किनारे खड़ी की। साइकिल वहीं छोड़कर धीरे-धीरे उस तरफ चला। तब तक लोगों की एक भीड़ जमा हो चुकी थी। वे पाँचों व्यक्ति अभी भी जमीन पर पड़े थे। निश्चिन्त और आजाद। दुनिया के सारे दुःखों से आज़ाद। बादलों का शोर जारी था। बूंदा-बूंदी जारी थी। कुछ लोगों के रूदन का शोर प्रारम्भ हुआ था, या होने वाला था। मैं उन्हें देख रहा था और सोच रहा था कि यदि मैंने इनका साथ दिया होता, तो मैं भी इनकी तरह पड़ा होता। अथवा यदि इन्होंने मेरी बात पर अमल किया होता, तो इस तरह लाचार पड़े नहीं होते। यह सब सोचकर बदन में भय की सिहरन का अनुभव हुआ। फिर अपने घर की बहुत याद आयी।

तभी वातावरण में एक आवाज़ गूंजने लगी थी। मेरे गाँव की तरफ से आने वाली यह आवाज बेहद मधुर थी। यह आवाज़ मन को शान्ति दे रही थी। उसे सुनकर आत्मा को चैन मिल रहा था। यह आवाज़ बेहद प्यारी थी। कुछ आवाज़ें बेहद मूल्यवान होती है। उन्हें अनमोल कहना ज्यादा ठीक होगा। उनका होना पृथ्वी को ज़िन्दगी का सन्देश देता है। यह थोड़ी दूर पर स्थित मेरे गाँव के चर्च की घण्टी की मधुर आवाज थी। रविवार का दिन था और शाम के वक़्त की आशीष और आराधना का समय था। यह आवाज़ लोगों से हाजिर होने का आह्वान कर रही थी।

मेरा मन शान्ति, सुकून और चैन का अनुभव करने लगा था। ज़िन्दगी के नवीनीकरण का अनुभव नया था। कुछ देर पहले यदि मैं अपने मन का आदेश नहीं मानता, तो अब तक दुनिया से विदा हो चुका होता। ज़िन्दगी का सफ़र बीच में ही खत्म हो जाता। अभी तो चलना था, दूर तक जाना था। मेरा काम अधूरा था। उसे पूरा करना ज़रूरी था। इस कठिन सफ़र में उस अदृश्य शक्ति का साथ बेहद ज़रूरी था। मैंने उसे दिल से धन्यवाद कहा। आँखें अपने तरीके से शुक्रिया अदा कर रही थी। उनकी शुक्रिया-अदायगी का अन्दाज़ निराला रहता है। उन्हें समझाना मुश्किल है। जब उन्हें कोई बड़ी खुशी हासिल हो, तो बादलों की तरह बरसती है और अगर कोई ज़ख्म सताने लगे, तब वहाँ शुक्रिया की गूँज सुनायी पड़ती है। सचमुच उनका अन्दाज़ निराला है।

उस स्थान पर लोगों की हलचल तेज हो उठी थी। बचाव-कार्य जोरों पर था, लेकिन इधर उस समय मेरा हृदय प्रसन्नता, शान्ति, कृतज्ञता आदि के अद्भुत भावों से भरा मालूम होता था और आँखें इन भावों को रोक पाने में असमर्थ मालूम पड़ती थी।

चर्च की वह घण्टी अभी भी वातावरण को पवित्रता और शान्ति का पैगाम दिये जा रही थी।

नोट :- आदरणीय श्री एडवर्ड रफ़ाएल सर के जीवन की एक सच्ची घटना के आधार पर यह कथा लिखी गयी है।

विक्टर ब्लेक, हुबली, कर्नाटक।

विश्वासियों का आदर्श - माँ मरियम

कुँवारी मरियम का नाम सुनते ही ख्रीस्तीय विश्वासियों का सिर भक्ति और श्रद्धा से झुक जाता है । वहीं कुछ गैर ख्रीस्तीय लोग मरियम को बाइबिल में एक साधारण स्त्री के रूप में देखते हैं। माँ के प्रति उनकी थोथी और अनर्गल दलीलों को सुनकर मन दुःख-संताप से भर जाता है। ऐसे लोगों को विश्वासियों की पुकार सुनकर माँ मरियम की मध्यस्थता के द्वारा हुए कई चमत्कार भी विश्वासी नहीं बना सके। प्रभु येसु ने ऐसे ही कठोर हृदय वालों के लिए सच कहा था कि वे आँखें रहते हुए भी अंधे और कानों के होते हुए भी बहरे हैं।

माँ मरियम ही ख्रीस्तीयों का आदर्श है। माँ मरियम के द्वारा ही येसु ख्रीस्त में विश्वास को गति मिलती है। मरियम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थी। उन्हीं पवित्र आत्मा के द्वारा वह विश्वास में दृढ़ता प्रदान करती है। मरियम ख्रीस्तीय विश्वासियों का केन्द्र और आदर्श है। ईश्वर की आज्ञाकारी के रूप में मरियम उत्तम आदर्श प्रस्तुत करती है।

पिता ईश्वर की इच्छा के अनुसार मरियम, येसु के मुक्ति-कार्य में सहभागी बनीं। यद्यपि वह दूत के संदेश सिमयोन और अन्ना की भविष्यवाणियों को अपने हृदय में समाए हुए थी फिर भी उन बातों पर मनन-चिन्तन करते समय वह बहुत व्यथित हो जाया करती थी। दूसरों की मदद करने हेतु मरियम अपनी इच्छा को येसु को सौंपकर निश्चिंत हो जाती है। काना के विवाह में येसु की इच्छा नहीं थी कि वे समय से पूर्व कोई चमत्कार करके अपने को ईश्वर के इकलौते पुत्र के रूप में प्रकट करें परन्तु अपनी माँ के आग्रह का मान-सम्मान बनाए रखने के लिए न चाहते हुए भी काना के विवाह में येसु ने अपना पहला चमत्कार करके अपने आपको प्रकट किया जिसमें मरियम की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

अपने दुःखभोग और क्रूस पर मृत्यु के पूर्व येसु ने अपनी रोती-बिलखती माता को देखा और उसके संसार में अकेले रह जाने की कल्पना से घोर कष्ट में भी येसु का हृदय दया से द्रवित हो गया। उन्होंने अपने प्रिय शिष्य योहन को अपनी माता और उसके प्रति सभी जिम्मेदारियों को सौंप दिया। मरियम ने भी योहन को अपना पुत्र स्वीकार कर उसे अपना अमूल्य प्रेम और अपनापन सौंप दिया जिसके फलस्वरूप आज माँ मरियम हम सब विश्वासियों का आदर्श बन गई । माता मरियम से आह्वान प्रार्थना में मरियम के उत्तम गुणों का जाप करते हुए विश्वासी उसे पुकारते हैं और मरियम उनकी प्रार्थनाओं को अपने पुत्र येसु तक पहुँचाती है और वे पूर्णता प्राप्त करती है।

सुख हो या दुःख मरियम हर समय हमें प्रार्थना करने की प्रेरणा देती हैं । ईश्वर और माता-पिता की आज्ञा-पालन, प्रभु ईश्वर के प्रति समर्पित भाव, प्रेम और सेवा-सहायता करने में हमें तत्पर रहना सिखाती है। वे परिवारों और समाज में एकता और मेल-मिलाप का उत्तम उदाहरण है। मरियम कुँवारियों का आदर्श और पवित्रता का प्रतीक है। वह सदा उनकी रक्षा और सहायता करती है। सर्वोच्च गुणों से सम्पन्न और प्रभु येसु की शिष्या के रूप में माँ मरियम प्रभु येसु की शिक्षाओं का पालन करने को प्रेरित करती है। तभी तो सभी ''विश्वासियों का आदर्श- माँ मरियम''पीढ़ी दर पीढ़ी हमारी सहायिका बनी रहे।

टीज़ा हॉजेस

मम्मा मेरी से येसु की ओर

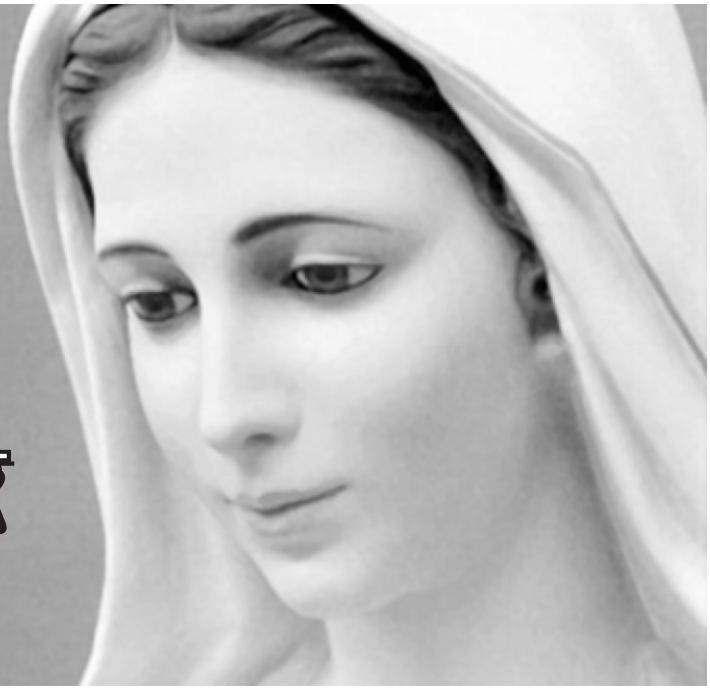

जब मैं पवित्रआत्मा सेविका संस्था में नवशिष्या के प्रशिक्षण हेतु बेंगलुरू गयी, वहां मेरी मुलाकात जर्मनी की सबसे बुजुर्ग धर्म बहन से हुई। हालांकि उनकी याद्दाश्त जाती रही। पर वह अपना नाम नहीं भूली। पूछने पर वह गर्व से बताती थी 'थीओडीमारा' (Theodimara)* उसके तुरंत बाद वह इसका अर्थ भी बताती थी (Through Mary to Jesus) मेरी से येसु की ओर। जितनी बार उनसे उनका नाम पूछा जाता था, उतने ही बार बड़ी जोश और उमंग के साथ वह बताती थी, इसलिए हम उनके मुंह से बार-बार यह सुनने के लिए उनके पास जाकर पूछते थे।

यदि मम्मा मेरी का नाम ही लेने से मन उमंग से भर जाता है तो रोजरी माला जपने से कितना आनंद आता होगा। हर दिन रोजरी माला बोलने से...

हमारा जीवन आनंद और पवित्रात्मा से भर जाता है

याद कीजिए जब मरियम एलिजाबेथ से मिलने जाती है, वहां ना केवल नन्हा बालक (योहन बपतिस्ता) माँ की कोख में आनंद से झूम उठता है बल्कि एलिजाबेथ भी पवित्र आत्मा से भर जाती है। हर दिन रोज़री माला बोलने से हमारे जीवन में आनंद और खुशी भर जाती है और हम भी पवित्र आत्मा से भर जाते हैं।

शैतान भाग जाता है

जब शैतान ने अपना रूप बदलकर आदम और हेवा को फुसलाया तब ईश्वर ने शैतान को श्राप दिया, ''मैं तेरे और स्त्री के बीच शत्रुता उत्पन्न करूंगा वह तेरा सिर कुचल देगी और तू उसकी एड़ी काटेगा।'' तब से लेकर आज तक मरियम शैतान का सिर कुचलती आई है और अपने भक्तों को उसके चंगुल से बचाती आई है।

- जब हम रोज़री माला अपने पास रखते हैं तो यह शैतान के लिए एक सिर दर्द है।

-जब शैतान हमें भक्ति के साथ प्रार्थना करते देखता है तो वह वहां से भाग खड़ा होता है।

-जब हम इस से प्रार्थना करते हैं तो शैतान हताश हो जाता है।

पापियों का मन परिवर्तन होता है

सन् 1917 में माता मरियम ने फातिमा में लूसिया, जेसीन्ता और फ्रांसिस्को को दर्शन देकर कहा पापियों के हृदय परिवर्तन के लिए प्रार्थना करो। उन्होंने बच्चों को नर्क का दृश्य दिखाया और शोधक अग्नि की आत्माओं के लिए प्रार्थना करने को कहा। हमें आज भी शोधक अग्नि की आत्माओं और सभी मृत आत्माओं के लिए प्रार्थना करने की आवश्यकता है क्योंकि वह स्वयं उस धधकती अग्नि से बाहर नहीं आ सकते।

इस तरह हम माँ की भक्ति करते करते उसके बेटे येसु के और भी करीब आते हैं। याद है ना! कान्हा के विवाह का वह दृश्य, जहां माँ हमारी ओर से अपने पुत्र येसु से गुजारिश करती है, ''उनकी अंगूरी समाप्त हो गई है''। माँ की विनय सुनकर येसु समय से पहले वहां चमत्कार करता है। इस तरह माँ आज भी हमारी पुकार अपने पुत्र तक ले जाती है और येशु अपनी माँ की पुकार को कभी अनसुना नहीं करता है। इसलिए हम स्मरण कर प्रार्थना में यह शब्द दोहराते हैं , ''ऐसा कभी सुनने में नहीं आया कि तेरा कोई भी शरणागत तुझसे सहायता मांग कर तथा ईश्वर के पास तेरी प्रार्थना की मदद चाह कर तुझसे अनसुना छूट गया हो।''

तो आइए अपने रोजरी माला को खोजें अपने हाथ में लें और घुटनों के बल प्रार्थना करते हुए यीशु तक पहुँचे।

Sr. Antonate Ssps

टूटती डाली से उड़ते पक्षी

(माँ मरियम की भक्ति का एक व्यक्तिगत अनुभव)

माँ मरियम की भक्ति और श्रद्धा मुझे मेरी माँ से सौगात में मिली है। मेरी माँ का प्रार्थना में जीवन और घर में हर दिन रोजरी माला बोलना मेरा प्रेरणा स्रोत रहा है। मैं अपने कुछ अनुभव आपके सामने साझा करना चाहती हूँ, क्योंकि माता मरियम की भक्ति से मुझे असंख्य वरदान प्राप्त हुए हैं।

बचपन की घटना है जब मैं बहुत छोटी थी और माँ की लाड़ली थी। उस समय मेरी माँ गंभीर रूप से बीमार हो जाती है। काफी इलाज करवाने पर भी उसके स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं आ रहा था और वह मरणासन्न पर थी। मैं निराश और हताश हो गई थी और किसी भी हालत में मैं मेरी माँ को खोना नहीं चाहती थी। मैं सच्चे दिल से माँ मरियम से प्रार्थना करने लगी कि मुझे मेरी माँ वापस दे दो, मैं अनाथ नहीं होना चाहती हूँ। माँ मरियम ने मेरी प्रार्थना सुनी और मेरी माँ को चंगाई प्रदान की। आज मेरी माँ भली चंगी है और घर की जिम्मेदारियों के साथ-साथ माँ मरियम की भक्ति में आज भी लीन है।

एक अन्य घटना मेरे पिताजी से जुड़ी हुई है। मेरे पिताजी एक शिक्षक है, और हर दिन जंगल के रास्ते से उनका आना जाना होता था। उस रास्ते पर एक ऐसी सुनसान और डरावनी जगह है, जिसके बारे में ऐसी मान्यता थी कि वहाँ पर नरबलि चढ़ाकर लोग अपनी मन्नतें पूरी करते थे। अप्रैल का महीना और भी डरावना होता था क्योंकि लोगों का मानना था कि उस समय बच्चों से लेकर बूढ़े, बहुत सारे लोग वहाँ से गायब हो जाते थे। जिसके चलते गाँव के लोगों में एक अज्ञात सा भय बना रहता था। अप्रैल का महीना था और पापा अपने निर्धारित समय पर घर नहीं लौटे। हम इंतजार करते रहे और एक अज्ञात डर से हम सभी घबरा रहे थे। तभी मेरे

मन में आया कि क्यों ना मैं मेरे पापा की सुरक्षा के लिए माता मरियम की मध्यस्थता के द्वारा प्रार्थना करूँ। मैंने पूरे विश्वास के साथ माँ मरियम से प्रार्थना की कि मेरे पापा जहां कहीं भी हो सुरक्षित रहे।

जैसे ही मैंने यह प्रार्थना की, मेरे मन में एक अलग सी शांति का अनुभव हुआ। मुझे ऐसा लगने लगा कि मेरे पापा सुरक्षित है। और तभी 4 घंटे के इंतजार के बाद पापा दरवाजे पर सुरक्षित खड़े थे। पापा को देखकर मेरा हृदय माता मरियम के प्रति कृतज्ञता से भर गया। यह अनुभव मेरे और मेरे परिवार के लिए एक टूटती डाली से उड़ते पक्षी के समान था। हमारा विश्वास लौट आया और कान्हा के विवाह भोज के समान हमारी खोई खुशी और विश्वास पुनः लौटकर आया।

ऐसे कई अनुभव है जिन्होंने यह विश्वास दिला दिया कि माँ की भक्ति में बहुत शक्ति है। माँ सदा ही हमारी प्रार्थना सुनती है। और इस तरह से माँ मरियम की भक्ति मुझमें बढ़ती गई और उसके बेटे यीशु से जुड़ी रही। मेरे इस चिंतन का मकसद यही है कि आप भी माँ की भक्ति द्वारा प्रभु यीशु की कृपा प्राप्त करते रहे।

Sr. Anjelina Lakra

श्रद्धांजली

SVD पुरोहितों एवं धर्मबन्धुओं के प्रति

यह ज़िन्दगी अद्भुत है। अद्भुत इसलिए, क्योंकि इसके खेल निराले हैं। यह हंसाती है, तो रूलाती भी है। बीते दिनों हमने SVD समाज के कुछ पुरोहितों और धर्मबन्धुओं को हमेशा के लिए खो दिया। इससे हम बेहद दुःखी हैं। उनका ईश्वर के पास लौट जाना हमें अत्यधिक दुःखी कर गया। जब तक वे साथ थे, तो हम उनका महत्व नहीं जान सके। अब उनके जाने के बाद उनकी बातें, उनका सहयोग, उनका साथ हमारी यादों का एक अटूट हिस्सा बन गयी है। और इस हक़ीकत से हम तब वाकिफ़ हुए, जब वे जा चुके थे। हमारा SVD परिवार उनके बिना सूना है। यह सूनापन कभी दूर नहीं हो सकता, क्योंकि अब हमारे उन बन्धुओं का निवास ईश्वर के सान्निध्य में विराजमान है। देवदूतों की तरह। अब शायद हम उनकी प्रार्थनाओं का एक ज़रूरी हिस्सा बन गए हैं। हमारा SVD परिवार उनके प्रति अपना भावपूर्ण श्रद्धांजली अर्पित कर रहा है।

-=-=-=-=-=-=-=-=-=-

प्रबोध कुमार राही

बहुत बार खुशनसीबी ख़ुद चलकर हमारे सामने हाजिर होती है और तब हमें अपनी तक़दीर पर हैरानी होती है। मुझे भी इलाहाबाद में कैथोलिक हिन्दी लेखकों की संगोष्ठी में भाग लेते हुए इस तरह की हैरानी से दो चार होना पड़ा, जब प्रबोध कुमार राही जी से मेरी मुलाक़ात हुई। मैं उनकी कविताएं पढ़ता था और वह मेरे सीखने का दौर था। मैं राही जी के अलावा कई दूसरे लेखकों को पढ़ा करता था। जैसे विक्टर ब्लेक जी। हाल ही में जब मैं **''दिव्य दर्पण''** पत्रिका का सम्पादक बना, तो राही जी से सम्पर्क किया। पत्रिका को लेकर उनकी राय बेहद महत्वपूर्ण थी। राही जी को भी वक़्त ने सदा के लिए हमसे जुदा कर दिया और अब उनके आशीर्वादों के सिवा हमारे पास कुछ भी बाकी नहीं है। वे न केवल एक महान कवि थे, बल्कि एक आदर्श ईसाई भी थे। उनका ईश्वर के पास चले जाना हमारे समाज के साहित्यिक वातावरण की एक बहुत बड़ी क्षति है, जिसकी क्षतिपूर्ति असम्भव है। वे जब तक हमारे साथ रहे, उनका सहयोग मिलता रहा। दिव्य दर्पण परिवार की तरफ से हम उन्हें तहेदिल से धन्यवाद और श्रद्धांजली अर्पित करते हैं।

-=-=-=-=-=-=-=-=-=-

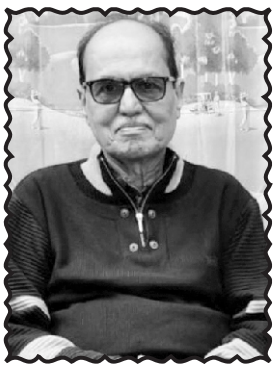

शेरी फ्राँसिस

शेरी फ्राँसिस, यानि शेरी अंकल दिव्य दर्पण के एक बड़े सहयोगी एवं शुभचिंतक व्यक्ति थे। वे अपने मृदुभाषी स्वभाव के लिए प्रसिद्ध थे। अपने जीवन के अंतिम साँस तक वे दूसरों के लिए कार्य करते रहे। 17 अप्रैल 2021 के दिन वे हमसे हमेशा के लिए विदा हो गए। उनका सहयोग कभी भुलाया नहीं जा सकता। दिव्य दर्पण परिवार उनके प्रति अपनी संवेदना व श्रद्धांजली प्रकट करता है। हमने अपने जिन सहयोगियों व साथियों को खो दिया, ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शाश्वत शान्ति व अनुग्रह प्राप्त हो।

कलाकार द्वारा अंतिम भोज के इस चित्र में यह दर्शाया जा रहा हैं कि सभी शिष्यों के साथ माता मरियम भी वहाँ मौजूद हैं। क्योंकि माता तो सदैव प्रभु येसु के साथ ही रही हैं। परन्तु सभी अंतिम भोज के चित्रों में माता मरियम को प्रभु येसु के साथ नहीं दिखाया गया हैं और कलाकार का यह मानना हैं कि जब हर समय माता मरियम प्रभु येसु के साथ थी तो अंतिम भोज में भी वह प्रभु येसु के साथ ही रही होगी। (चित्रकार-फादर अजीतकुमार टोप्पो एस.वी.डी.)

www.DesktopBackgrounds.com
WIDEWALLPAPERS.NET

सभी पुरोहितों

एवं धर्म भाईयों को

जुबली महोत्सव

पर

दिव्य-दर्पण

परिवार की

ओर से

हार्दिक

शुभकामनाएँ